Prof. Kumari Sadhana Prasad

CC-5 PG Sem. II

Origin and Current status of Cognitive Psychology.
संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की उत्पत्ति एवं वर्तमान स्थिति
प्रश्न 1. Cognitive Psychology के ऐतिहासिक विकास

Cognitive Psychology की उत्पत्ति एवं वर्तमान स्थिति को समझने के लिए हमें Cognitive Psychology का History को जानना होगा। किसी भी चीज की वर्तमान स्थिति को जानने के लिए Historical Development को समझना जरूरी होता है। जिससे उसके वर्तमान स्थिति की समीक्षा हो जाती है।

Cognitive Psychology के History की शुरुआत आज से करीब 120 साल पहले मानी जाती है। सन 1950 ई० में Boring के अनुसार आरंभिक ग्रीक दार्शनिकों ने जानना चाहा था कि लोग किस तरह से ज्ञान अर्जित करते हैं।
सन 1879 ई० में William Want ने जर्मनी के लिपजीक विश्वविद्यालय में मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए एक प्रयोगशाला की स्थापना की थी। यह प्रयोगशाला विश्व की सबसे पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला थी।
Want का कहना था कि Psychology के अंतर्गत मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए निरीक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है। अन्तः निरीक्षण विधि कई अर्थों में Cognitive Research method से मिलती-जुलती थी। Want ने स्पष्ट रूप से कहा उच्चतर मानसिक प्रक्रियाएँ जैसे, चिंतन, भाषा तथा समस्या समाधान इत्यादि का अध्ययन प्रयोगशाला में अन्तः निरीक्षण विधि द्वारा किया जाता है। लेकिन Want के इस विचार को Oswell, Kulbe वु० वि०वि० में शोधकार्य करके गलत ठहराया गया उनके अनुसार "किसी समस्या के समाधान के दौरान प्रयोज्य के मन में किसी तरह की कोई प्रतिमा नहीं आती, जिसे प्रतिमा रहित चिंतन कहा जाता है।"

वर्तमान समय में Cognitive Psychology के लिए Want के द्वारा जो अन्य मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया गया, एक वरदान साबित हुये है।

Want ने कहा कि Attention Congnitive का एक महत्वपूर्ण भाग है।

Concept performantion के क्षेत्र में किया गया अध्ययन भी Cognitive Psychology के लिए एक नींव के समान है।

आधुनिक समय में Semantic memory के क्षेत्र में किए गए Research के लिए प्रेरणा स्रोत साबित हुए है।

सन् 1980 में William James ने Principle of Psychology नामक पुस्तक प्रकाशित किया, जिसमें मानव अनुभूतियों के बारे में विस्तृत अध्ययन किया गया है, William James ने Memory के theory theory का वर्णन किया। Memory को दो भागों में बांटा है। पहला Primary memory तथा दूसरा Secondary memory कहते है।

Primary memory को STM तथा Secondry memory को LTM कहा जाता है। Congnitiv Psychology को Memory के theory से काफी फायदा हुआ।

सन् 1900 के मनोवैज्ञानिकों ने अंतः निरीक्षण विधि का खुलकर विरोध किया। खास कर व्यवहारवादियों ने इसका खुलकर विरोध किया।

सन् 1913 ई० मे Y. B. Watson ने व्यवहारवादियों व्यवहारवाद की स्थापना की।

इन्होने बताया कि किसी भी प्राणी के बारे मे उनके व्यवहार को देखकर निष्कर्ष निकाला जाता है।

Watson ने भी व्यवहार का अध्ययन करने के लिए इस विधि का प्रयोग किया। व्यवहारवादियों ने प्रतिमा, विचार, चिंतन इत्यादि को अस्वीकृत कर दिया। इनका कहना है कि चिंतन एक प्रकार का Sub vocal speech है।

इस प्रकार व्यवहारवादियों ने मानसिक क्रियाओं के अध्ययन को अस्वीकृत कर दिया।

फिर भी Congnitive Psychology के विकास में व्यवहारवादियों के बाद Gestalt मनोवैज्ञानिकों का स्थान आता है।

गेस्टाल्टवादियों में वर्दाइमर, कोफ्का, कोहलर इत्यादि का नाम महत्वपूर्ण है। इनलोगों का कहना है कि किसी चीज का प्रत्यक्षीकरण सम्पूर्णता के रूप में होता है न कि विभिन्न अंशों में बाँटकर।

गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि किसी भी Problem का Selection Insight के आधार पर किया जा सकता है।

वर्तमान समय में Cognitive Psychology के लिए गेस्टाल्ट-~~सिद्धांत~~ वादियों का अध्ययन काफी महत्वपूर्ण बन गया।

सन् 1950 तथा 1960 ई० के बीच के समय को Cognitive Revolution की संज्ञा दी गई।